अध्याय 3

प्राचीन भारत और विश्व

पहले प्रायः यह माना जाता था कि प्राचीनकाल में भारत का दुनिया के दूसरे देशों से कोई सम्बन्ध नहीं था, लेकिन पुरातत्व एवं इतिहास से सम्बन्ध रखने वाली खोजों से अब यह स्पष्ट हो गया है कि प्राचीन भारत की सिन्धु–सरस्वती सभ्यताकाल से लेकर दसवीं शताब्दी ईस्वी तक भारत का दुनिया के दूसरे देशों से घनिष्ठ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्पर्क रहा था।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यताकाल से लेकर गुप्तवंशी सम्राटों के समय तक मिस्र, मेसोपोटेमिया, युनान, रोम आदि पश्चिमी देशों के साथ भारत के व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध थे। हर्षवर्धन के बाद दक्षिणी भारत में चोल साम्राज्य के विस्तार के समय ईसा की 10वीं शताब्दी तक पश्चिमी देशों के मुकाबले मध्य एशिया एवं दक्षिण–पूर्वी एशिया के साथ भारत के ऐसे घनिष्ठ व्यापारिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध थे जिस कारण भारत को 'वृहत्तर भारत' के रूप में पहचाना जाता था।

संसार के मानचित्र में आज भारत को जिन भौगोलिक और राजनैतिक सीमाओं में दिखाया जाता है, पहले भारत इतना छोटा या सीमित नहीं था। वह और भी बड़ा था। प्राचीनकाल में भारत की भौगोलिक सीमाएँ काफी विस्तृत थी। भारत के उत्तर–पश्चिम में स्थित आज का अफगानिस्तान भारत का ही हिस्सा था। पूरे मध्य एशिया के भू–भाग में भारत की संस्कृति और जीवन प्रणाली फैली थी। इधर पूर्व में भारत की भौगोलिक सीमाएं बर्मा (म्यानमार) तक विस्तृत थी। इसके अलावा भारत के दक्षिण–पूर्व में बंगाल की खाड़ी से और भी पूर्व दिशा में स्थित मलाया, जावा, सुमात्रा, बर्मा (म्यानमार) बोर्नियो, बाली, चम्पा, हिन्दचीन, इंडोनेशिया, स्याम, कम्बोडिया तथा सूरीनाम आदि द्वीप समूह और श्रीलंका भारत के ही अंग थे। यहाँ भारत के राजाओं का आधिपत्य था। इन द्वीपों में रहने वाले निवासी भारतीयों की तरह ही जीवन बसर करते थे। तब प्राचीनकाल से लेकर लगभग दसवीं शताब्दी तक वास्तविक स्थिति यह थी कि भारत के पश्चिम में मध्य एशिया के भूभागों से लेकर इधर पूर्व में बर्मा और दक्षिणी पूर्वी एशिया के द्वीप समूह तक और उत्तर में तिब्बत से लेकर दक्षिण में श्रीलंका तक के भूभाग में भारतीय जीवन लहराता था। जीवन के विविध पक्षों में भारत और भारत की संस्कृति ही नजर आती थी। तब भारत बड़ा और बड़ासे भी बड़ा नजर आता था। बड़ा शब्द को संस्कृत में 'बृहत्तर' बोला जाता है इसीलिए इतिहासकार एशिया के इस भूभाग को जहाँ प्रचीनकाल से लेकर दसवीं शताब्दी तक भारत की संस्कृति फैली हुई थी, बड़े से बड़ा भारत अथवा 'वृहत्तर भारत' के नाम से पुकारते हैं। संक्षेप में वृहत्तर भारत के अन्तर्गत भारत के भूभाग के साथ उन देशों को सम्मिलित माना जाता है, जहां प्राचीनकाल में भारतीयों का राजनीतिक एवं संस्कृतिक प्रभुत्व था। वृहत्तर भारत में भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के निम्न कारण थेः–

i. भौगोलिक कारणः–इसका सर्व प्रमुख कारण भारत की भौगोलिक स्थिति थी। भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग के मध्य में स्थित है। इस स्थिति के कारण ही भारत का अन्य देशों के साथ सम्बन्ध रहना स्वाभाविक था।

ii. आर्थिक कारण :–प्राचीनकाल में भारत एक उन्नत देश था और यहां के बने हुए सामान की विदेशों में प्रचुर मांग थी। भारतीय व्यापारी विदेशों में अपना माल बेचने जाते थे। भारत से जाने वाले कई व्यापारी विदेशों में जाकर बस गए थे और कई आते–जाते रहते थे। इन व्यापारियों के दूसरे देशों में आने –जाने और बसने के साथ उन्नत भारतीय सभ्यता और संस्कृति का उन देशों में प्रचार–प्रसार स्वाभाविक था।

iii. धार्मिक कारणः– बौद्ध धर्म के उदय से पूर्व जो व्यापारी आर्थिक कारणों से दक्षिण पूर्वी एशिया में बसे, उन्होंने हिन्दू धर्म की मान्यताओं का प्रसार किया। बौद्ध धर्म के उदय के पश्चात् भारत से कई बौद्ध धर्म प्रचारक समय–समय पर अन्य देशों में धर्म प्रचार के लिए गए। इन धर्म प्रचारकों ने विदेशों में मात्र धर्म को ही नहीं फैलाया, बल्कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का भी प्रचार किया। इसके अलावा दक्षिणी पूर्वी द्वीप समूह में चोल राजाओं ने हिन्दू धर्म के प्रचारक भेजे। उनके साथ कई भारतीय साहित्यकार, कलाकार आदि इन देशों में गए और उन सबने मिलकर वहां भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य, कला, धर्म आदि का प्रचार किया।

iv. राजनैतिक कारण :– प्राचीनकाल में भारत के कई राजा और राजकुमार दक्षिण–पूर्वी एशिया के भागों में गए और वहां उन्होंने अपने राज्य एवं उपनिवेश संस्थापित किए। इन भागों में इस प्रकार के राज्यों तथा उपनिवेशों की स्थापना के साथ भारतीय विचारधारा, भाषा, संस्कृति और सभ्यता का सरलतापूर्वक विदेशों में प्रसार हुआ।

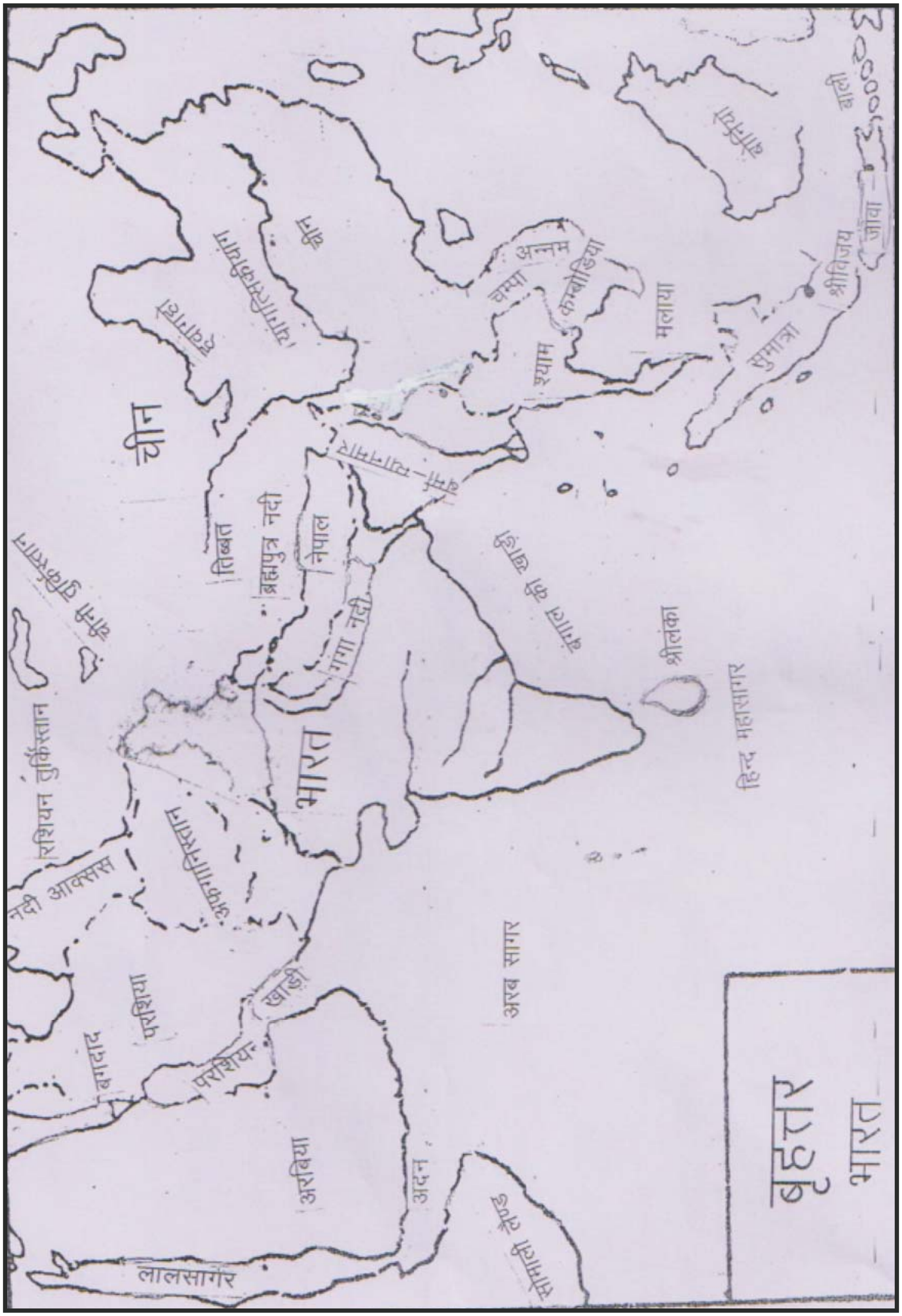
चीन
तिब्बत
ब्रह्मपुत्र नदी
नेपाल
गंगा नदी
भारत
रशियन तुर्किस्तान
नदी आक्सस
अफगानिस्तान
परशिया
बगदाद
परशियन खाड़ी
अरबिया
अदन
लालसागर
सोमाली लैण्ड
अरब सागर
हिन्द महासागर
श्रीलंका
बंगाल की खाड़ी
श्याम
मलाया
चम्पा
अन्नम
कम्बोडिया
सुमात्रा
श्रीविजय
जावा
बाली
बृहत्तर भारत

इन सभी कारणों की पृष्ठभूमि में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मध्य एशिया एवं उत्तरी पूर्वी तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में प्रसार हुआ।

मध्य एशिया :– प्राचीनकाल में सांस्कृतिक दृष्टि से मध्य एशिया का प्रदेश भारत के पूर्ण प्रभाव में था। इस प्रदेश के खोतान, कूचा, काराशहर, तुर्फान आदि स्थल भारतीय संस्कृति के प्रमुख केन्द्र थे। इन प्रदशों में हुई पुरातात्विक खुदाई में निकले अवशेषों, मूर्तियों, भित्ति चित्रों तथा वहाँ के प्राचीन साहित्य में वर्णित गाथाओं और राजाओं के नामों आदि से स्पष्टतया ज्ञात होता है कि इन भागों में भारतीय धर्म, भाषा, लिपि तथा कलात्मक प्रवृत्तियों का अत्यधिक प्रचार था।

खोतान भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बहुत बड़ा केन्द्र था। वहाँ बौद्ध धर्म की महायान शाखा के अनुयायी अत्यधिक संख्या में रहते थे। यहाँ इतनी अधिक संख्या में भारतीय बस चुके थे कि उन्होंने स्थानीय लोगों को भारतीय रंग में रंग दिया था। खोतान की भांति कूचा भी भारतीय संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ की लगभग सम्पूर्ण जनता बौद्ध धर्म का पालन करने वाली थी। लगभग एक हजार स्तूपों एवं विहारों का यहां निर्माण किया गया था और संस्कृत भाषा, भारतीय ज्योतिष, आयुर्वेद एवं कला का प्रचलन था। यहाँ के शासकों के नाम भारतीय थे, जैसे– हरदेव, स्वर्गदेव आदि।

खोतान एवं कूचा की भाँति ही काराशहर एवं तुर्फान भी भारतीय सभ्यता के प्रमुख केन्द्र थे। ये दोनों अलग–अलग प्रदेश थे। काराशहर के लिए कहा जाता है कि यह कनिष्क के साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण भाग था। तुर्फान प्रदेश में भी पांचवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था। यहाँ पर हुई खुदाई में बौद्ध विहारों, स्तूपों तथा मूर्तियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनसे इस क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रभाव का ज्ञान होता है। आठवीं शताब्दी में जब से इस्लाम ने यहां प्रवेश किया तो यहाँ से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति बड़ी तेजी से लुप्त हो गई।

अफगानिस्तानः– प्राचीनकाल में अफगानिस्तान तो भारत का ही एक अंग था। ऋग्वेदिक काल में भारतीयों की बस्तियां यहाँ फैली हुई थीं। मौर्य काल में भी अफगानिस्तान भारतीय साम्राज्य का अंग था। वस्तुतः प्राचीनकाल में अफगानिस्तान उत्तर भारत का एक भाग था, जहाँ के लोग मध्य भारत की भाषा बोलते थे। बौद्ध धर्म यहां फला फूला था। बौद्ध धर्म के अतिरिक्त यहां हिन्दू धर्म का भी बड़ा प्रचार था।

चीनः– चीन और भारत के प्राचीन सम्बंधों का उल्लेख महाभारत, मनु स्मृति तथा कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक से प्रकट होता है किन्तु ईसा की पहली शताब्दी धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से चीन और भारत का आदान–प्रदान प्रारम्भ हो गया था। लगभग 65 ई. में चीनी सम्राट मींगती, धर्मरत्न तथा मातंग नामक दो बौद्ध भिक्षुओं को भारत से चीन ले गया था। वे बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद करते रहे। चीन में बौद्ध धर्म के व्यापाक प्रसार के साथ भारतीय स्थापत्यकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला का अधिक प्रभाव पड़ा। भारतीय गणित, ज्योतिष, चिकित्सा तथा संगीत का भी वहाँ काफी प्रचार हुआ। चीन में कई बौद्ध मंदिर एवं गुहा मंदिर बनाए गए। भारतीय चित्र शैली का अनुसरण कर कई भित्ति चित्र बनाए गए तथा भारतीय शैली की वहाँ कई मूर्तियां बनने लगी। चीन से ही बौद्ध धर्म कोरिया और जापान तक फैला।

तिब्बतः– उत्तर में भारत का निकटतम पड़ौसी तिब्बत भी सभ्यता और धर्म के क्षेत्र में भारत का ऋणी हैं। तिब्बत के राजा स्रोसांग नेम्पो ने भारत से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। वहाँ पर बौद्ध धर्म का खूब प्रचार–प्रसार हुआ तथा बौद्ध मंदिर एवं विहार बनवाए गए। संस्कृत भाषा तथा भारतीय लिपि ब्राह्मी एवं खरोष्ठी उन्होंने अपनाई। इसके साथ ही कई तिब्बती छात्र भारतीय विद्यालयों में आकर अध्ययन करने लगे।

श्रीलंका– भारत और श्रीलंका का सम्बन्ध प्राचीनकाल से है। भारतीय इतिहास में इसका सर्वप्रथम उल्लेख वाल्मिकी रामायण में आता है, जबकि राम ने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की थी। मौर्यकाल के इतिहास से यह प्रकट होता है कि सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था और वहां के राजा तिस्सा ने बौर्द्ध धर्म स्वीकार कर उसे राजकीय संरक्षण प्रदान किया था। फलतः बौद्ध धर्म वहां का सीानीय धर्म बन गया था । धर्म के साथ–साथ पाली भाषा और ब्राह्मी लिपि का भी श्रीलंका में प्रचार हुआ था। साथ ही श्रीलंका के साहित्य, कला तथा जन–जीवन पर भारतीय संस्कृति का पर्याप्त प्रभाव पड़ा, जिसकी झलक आज भी स्पष्ट दिखाई देती है।

बर्माः–बर्मा का वर्तमान में 'म्यानमार' नाम है। यहां प्रथम शताब्दी से भी पहले भारतीय संस्कृति का प्रसार हो चुका था। यहां के आराकान, तागोंग, श्रीक्षेत्र, यातोन और पीगू में हिन्दू जीवन शैली पर्याप्त मात्रा में विकसित थी। बर्मा के कई लेख संस्कृत व पाली भाषा में है। हिन्दू देवी–देवताओं के कई स्मारक बर्मा में पाये गये हैं। बर्मा के मान राज्य में हिन्दू धर्म का सर्वाधिक प्रभाव था। नवीं–दसवीं शताब्दी में पागन राज्य की स्थापना हुई। तब यहाँ का प्रसिद्ध राजा अनिरूद्ध था। इस पागन वंश के राज्यकाल में ब्राह्मण धर्म का स्थान बौद्ध धर्म ने लिया। बर्मा का आनन्द मंदिर भारतीय शिल्पकारों द्वारा ही निर्मित है। बर्मा (म्यांमार) में आज भी कई नाम हिन्दू संस्कृति

से मेल खाते हैं।

कम्बोजः– कम्बोज या कम्बोडिया को पहले फूनान कहा जाता था । वहाँ ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी में कौडिन्य नामक भारतीय ने अपने राज्य की स्थापना की और वहाँ नागी जाति की सोभा नामक कन्या से विवाह किया। इसी ने वहाँ के निवासियों को कपड़ा पहिनना सिखाया। कौडिन्य के वंशजों के शासनकाल में कम्बोडिया की प्रगति हुई और वहाँ भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ।

अंगकोरवाट मंदिर

नवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जय वर्मा के वंशजों के काल में कम्बोडिया में भारतीय भाषा संस्कृत, दर्शन, साहित्य, गणित तथा ज्योतिष का वहाँ प्रचार हुआ। इसी वंश के राजा 'सूर्य वर्मा ' द्वितीय ने अंगकोरवाट नामक प्रसिद्ध विष्णु मंदिर का वहां निर्माण करवाया। यह मंदिर भारतीय स्थापत्य कला का उत्तम नमूना है। इसी तरह जय वर्मा सप्तम ने 'अंगकोरथोम' नामक एक और वैष्णव मंदिर का निर्माण करवाया। कम्बोडिया के अभिलेखों तथा अन्य ऐतिहासिक अवशेषों से ज्ञात होता है कि वहाँ के नगरों के नाम भारतीय नगरों के समान थे, , जैसे–ताम्रपुर, आढ्यपुर, विक्रमपुर आदि। कम्बोडिया में यज्ञादिक का भी प्रचार था एवं प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के अनुरूप आश्रमों में शिक्षा का कार्य होता था। वहीं प्राचीन मंदिरों में शिव , विष्णु, उमा, ब्रह्मा, सरस्वती, गंगा, चण्डी, लक्ष्मी, गणेश, आदि की मूर्ति पूजा प्रचलित थी और वेद पुराण, रामायण, महाभारत आदि भारतीय साहित्य का प्रचार था। वहां के प्राचीन मंदिरों में शिव और विष्णु के मंदिर अधिक हैं।

चम्पाः– कम्बोडिया या कम्बोज के पूर्वी भाग में प्राचीनकाल में चम्पा नामक राज्य था, जिसका आधुनिक नाम वियतनाम है। यह भी प्राचीनकाल में भारतीय उपनिवेश था। यहाँ का पहला राजा 'श्रीमार' हिन्दू था। इस राज्य में भी कई हिंदू राजवंशों ने लम्बे समय तक शासन किया था, जिनमें भद्रवर्मा, गंगराज, पाण्डुरंग भृगु और हरिवर्मा प्रमुख थे। चम्पा के प्राचीन ऐतिहासिक अवशेषों और परम्पराओं से ज्ञात होता हैं कि वहां भारत की भांति वर्ण व्यवस्था विद्यमान थी और विवाह की पद्धति भारत की तरह ही थी। वहाँ यज्ञोपवीत धारण करने की प्रथा भी थी। राजकुलों में सती प्रथा प्रचलित थी और विधवाएँ सादा जीवन व्यतीत करती थीं। इस राज्य में भारतीय त्योहार मनाये जाते थे। चम्पा की राजभाषा संस्कृत थी और वहाँ भारतीय धर्म, दर्शन, साहित्य तथा व्याकरण आदि का खूब अध्ययन होता था। वहाँ शैव मत का सबसे अधिक प्रचार था। भद्रवर्मा ने 'माइसन' में एक मंदिर का निर्माण करवाया था। शिव के अलावा अन्य भारतीय देवता तथा राम व सीता की भी वहाँ पूजा होती थी और उनके मंदिर बनवाए गए थे। वहाँ के मन्दिरों में चालुक्यों की स्थापत्य निर्माण शैली का अनुसरण किया गया था। चम्पा में बाद में बौद्ध धर्म का भी व्यापक प्रचार हुआ और कई बौद्ध मंदिरों का निर्माण हुआ।

मलायाः– मलाया द्वीप समूह जिसे अब मलेशिया कहते है, में प्राचीन काल में कई हिन्दू राज्यों का विकास हुआ। इनमे कर्मरंग, कलशपुर, कटाह व पहंग आदि राज्य प्रमुख थे। इस प्रायद्वीप के अनेक भागों में प्राचीन मन्दिरों के खण्डहर तथा मूर्तियां पर संस्कृत,, भाषा में उत्कीर्ण लेख आदि प्राप्त हुए हैं जिससे पता चलता है कि मलाया में भारतीय संस्कृति का पूर्ण प्रभाव था। यहाँ के राजाओं में गौतम, समुद्र विजयवर्मन आदि का भारतीय नामों के सदृश उल्लेख मिलता हैं। यहां पर भी बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ और बौद्ध स्तूपों का निर्माण हुआ था। यहाँ आज भी ऐसे ब्राह्मण परिवार मौजूद हैं, जिनके पूर्वज भारत से गए थे। दक्षिण में चोल साम्राज्य के प्रतापी राजा राजेन्द्र चोल प्रथम का भी इस द्वीप समूह पर व्यापारिक नियंत्रण था।

स्यामः– स्याम को आजकल थाई जाति के नाम पर 'थाईलैण्ड' कहा जाता है किन्तु थाई जाति का प्रभाव यहाँ तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं था। इसके पूर्व यहां भारतीयों का प्रभुत्व था और यहां पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण प्रभाव था। यहाँ हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म की महायान विचारधारा का अधिक प्रचलन था। यहाँ के शासकों ने बौद्ध मंदिर और विहारों का निर्माण करवाया था। इस प्रदेश में पाली भाषा का प्रसार भी था और वहां की स्थापत्यकला एवं तक्षणकला पर भारतीय कला प्रेरित तथा प्रभावित थी।

जावाः– वर्तमान इंडोनेशिया में स्थित जावा में भारतीयों ने 65 ई. पू. में अपना उपनिवेश स्थापित कर लिया था। फाह्यान के वर्णन के अनुसार पांचवीं शताब्दी के आरंभ में जावा में हिन्दू धर्म फैल चुका था और वहाँ ब्राह्मणों का बोलबाला अधिक था। शिव के उपासकों की संख्या वहाँ अधिक थी। जावा में हजारों बौद्ध एवं हिन्दू मंदिरों के अवशेष पाए गए हैं। जावा में हिन्दू राजवंशों एवं

भारतीय संस्कृति का प्रभाव पन्द्रहवीं सदी में कुबलखाँ के आक्रमण से पहले तक बना रहा। कुबलखाँ के आक्रमण के साथ वहां इस्लाम का प्रचार हुआ और भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव कम होता गया।

सुमात्राः— इसका वर्तमान नाम इण्डोनेशिया है। प्राचीनकाल में यह द्वीप स्वर्ण द्वीप के नाम से जाना जाता था। इसका प्रसिद्ध नगर 'श्रीविजय' था। यहाँ चौथी शताब्दी से लेकर सातवीं शताब्दी तक विजय वंश का शासन रहा। यह हिंन्दू वंश था। इस काल में सुमात्रा की बड़ी प्रगति हुई। दक्षिणी भारत के राजेन्द्र चोल प्रथम का भी यहाँ प्रभुत्व रहा था। श्रीविजय नगर भारतीय संस्कृति एवं धर्म का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ बौद्ध धर्म का भी काफी प्रचार हुआ। पन्द्रहवीं शती में यहां के हिन्दू राजा ने भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया, जिससे हिन्दू संस्कृति का प्रभाव कम होता चला गया।

बालीः—इंडोनेशिया स्थित बाली में चौथी शताब्दी में हिन्दू राज्य की स्थापना हुई । यहां हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही प्रचलित थे और शिव एवं विष्णु की पूजा होती थी। यद्यपि समय के साथ यहां भी इस्लाम का प्रवेश हुआ, किन्तु उनकी संस्कृति पर इस्लाम का प्रभाव अधिक नहीं पड़ा। फलतः आज भी हिन्दू धर्म व भारतीय संस्कृति के अवशेष यहां विद्यमान हैं।

बोर्नियाः— चौथी शताब्दी में बोर्नियो (बकलपुर) में भी हिन्दुओं ने अपना राज्य स्थापित कर लिया था। उस काल में मूल वर्मा यहाँ का शासक था। वह प्राचीन भारतीय संस्कृति का भक्त था। अतः वहां भी भारतीय संस्कृति की जड़ें काफी जम गईं। बोर्नियो में शिव, गणेश, दुर्गा, नन्दी, महाकाल एवं बुद्ध की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इनसे वहां पर भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

लवदेशः— लवदेश को वर्तमान में लाओस के नाम से जाना जाता है। यहाँ भगवान राम के पुत्र लव के नाम से एक नगरी 'लवपुरी' है। लवदेश के आदि देवता 'भद्रेश्वर' है। कभी यहां पर शैवधर्म का व्यापक प्रभाव था। लवदेश का प्रथम राजा श्रुतवर्मन था। इसका पुत्र श्रेष्ठ वर्मन था, जिसने श्रेष्ठपुर नाम से नगर बसाया। वर्ष प्रतिपदा, व्यास पूर्णिमा, विजयादशमी कभी यहाँ के लोकप्रिय त्यौहार थे। बौद्धधर्म के आगमन के बाद यहाँ कई बौद्धमठ तथा स्तूप आदि बने। यहां शालिवाहन संवत् का प्रचार भी था, जिसका प्रभाव आज भी है।

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि इस्लाम के उदय से पहले मध्य एशिया और दक्षिणी—पूर्वी द्वीप समूह में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अधिक प्रचार—प्रसार हुआ था। भारतीयों ने प्रेम और सहानुभूति के द्वारा अपने धर्म और संस्कृति का प्रचार किया था।

1. बृहत्तर भारत में व्यापार, उद्योग एवं वाणिज्य

(क) व्यापार

प्राचीनकाल में भारत एक समृद्ध देश था। देश सोने की चिड़िया के नाम से विख्यात था। भारत के गाँव आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर थे। विश्व के विभिन्न कोनों से व्यापारी भारत का निर्मित माल खरीदने आते थे। विदेशों से जल व थल दोनों मार्गों से व्यापार होता था। स्थल मार्ग द्वारा पूर्व में तिब्बत या चीन और पश्चिम में ईरान और अरब से व्यापार होता था। पूर्व में ताम्रलिप्ति का बन्दरगाह प्रमुख था। चीन, लंका, जावा तथा सुमात्रा आदि देशों में भारतीय व्यापारी इसी बन्दरगाह द्वारा जाते थे। बन्दरगाहों पर जहाजों के आने—जाने की उत्तम व्यवस्था थी। विदेशी व्यापारी अपने साथ सोना, चांदी, लाल मणि तथा हीरे जवाहरात लाते थे और इनके बदले में भारत से सूती, रेशमी व जरी के कपड़े, तम्बाकू व मसाले आदि ले जाते थे। प्राचीन भारत में विदेशी व्यापार काफी विकसित अवस्था में था। बाहरी देशों के साथ व्यापार को जाने वाले व्यापारी वर्ग का मुखिया सार्थवाह कहलाता था।

पश्चिमी देशों से मीठी शराब और अंजीर, चीन से रेशम तथा नेपाल से ऊन मंगवाया जाता था। लौंग व चन्दन की लकड़ी लंका पहुंचाई जाती थी और वहाँ से उसका निर्यात पश्चिमी देशों में किया जाता था। मोती, बहुमूल्य पत्थर, सुगंधित पदार्थ, कपड़े, मसाले, नील, औषधियां, नारियल आदि निर्यात की प्रमुख सामग्री थी। इन वस्तुओं के बदले विदेशों से सोने के सिक्कों का भी आयात होता था।

प्राचीन भारत में आन्तरिक व्यापार भी उन्नत अवस्था में था। आन्तरिक व्यापार की सुविधा के लिए राजमार्गों और जल मार्गों की समुचित व्यवस्था थी। जल मार्ग व्यापार की दृष्टि से अधिक सुविधाजनक था। गंगा, ब्रह्मपुत्र, नर्बदा, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों द्वारा जलमार्ग से व्यापार होता था। इसके लिए बड़ी—बड़ी नौकाएं बनायी जाती थी। थलमार्ग से भी व्यापार होता था।

(ख) उद्योगः— प्राचीन भारत के उद्योग—धन्धे उन्नत अवस्था में थे। भारत के शिल्पियों की धाक विश्वभर में थी। भारतीय दस्तकारों की कला का परिचय इस तथ्य से उजागर होता है कि एक मलमल का थान जो 20 गज लम्बा और एक गज चौड़ा होता था उसे अंगूठी में से निकाला जा सकता था।

भारत में सबसे उन्नत उद्योग वस्त्रोत्पादन था। सूती कपड़े के व्यवसाय के लिए बनारस, वत्स, बंग, मदुरा आदि में

कारखाने थे। सूती कपड़ों के अलावा ऊनी और रेशमी वस्त्र भी पर्याप्त मात्रा में बनाये जाते थे। चाणक्य के अर्थशास्त्र में कई प्रकार के ऊनी कम्बलों का उल्लेख मिलता है। मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय लोग मलमल के बारीक वस्त्र पहनते थे, जिन पर जरी का काम होता था। बंगाल मलमल के कपड़े बनाने में विख्यात था। कपड़े विविध रंगों के होते थे।

प्राचीन भारत में दूसरा मुख्य उद्योग धातु सम्बन्धी था। खानों से तरह– तरह की धातुएं निकालकर उसे पिघला–साफ कर उसके विविध बर्तन, अस्त्र– शस्त्र, आभूषण, मूर्तियां आदि बनाई जाती थीं। धातुओं में सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, जस्ता आदि की प्रमुखता थी। समुद्रों से विविध मणि, मुक्ता, रत्नसीप आदि निकालने का काम भी होता था। इन रत्नों का प्रयोग आभूषणों में किया जाता था।

लकड़ी का व्यवसाय भी उन्नत अवस्था में था। लकड़ी की बड़ी–बड़ी नावें तथा जहाज, घर के दरवाजे और फर्नीचर , बैलगाड़ियां, रथ, सन्दूक, घर–गृहस्थी का अन्य सामान–पलंग, खिलौने आदि बनाये जाते थे। अन्य उद्योगों में लुहार का व्यवसाय, चमड़े का उद्योग, हाथी दांत की विभिन्न वस्तुएं बनाने, भवन निर्माण, चीनी, नमक, नील उत्पादन आदि उद्योग उन्नत अवस्था में थे।

(ग) वाणिज्य व आर्थिक संस्थाएँः– प्राचीन भारत के प्रारम्भिक काल में व्यापार वस्तु–विनिमय द्वारा होता था। बाद में सिक्के का प्रचलन हो गया। व्यापारिक लेन–देन का काम सिक्कों से होता था। सोने, चांदी और ताम्बे के सिक्कों का प्रचलन था। स्वर्ण का सिक्का 'निष्क', चाँदी का सिक्का 'धरण' और तांबे का माषक तथा काकणी कहा जाता था। मुद्रा ढ़ालने का काम सरकारी टकसाल में होता था।

प्राचीनकाल में व्यावसायिक संगठनों का विकास हो चुका था। व्यावसायिक संगठनों को 'श्रेणी' या 'गण' कहा जाता था। श्रेणियों के अध्यक्ष को मुखिया कहा जाता था। ये व्यावसायिक संगठन अपने–अपने व्यावसायिक हितों की सुरक्षा करते थे। अलग–अलग व्यवसायों की अपनी अलग–अलग श्रेणियां होती थीं। अपने–अपने व्यवसायों के संचालन के लिए उनके अपने नियम थे। वे आधुनिक बैंक का कार्य भी करते थे। ऋण ब्याज पर देते थे और निधियाँ ब्याज पर अपने पास रखते थे। व्यावसायिक संगठन श्रेणियों द्वारा व्यापार और शिल्प को प्रोत्साहन प्राप्त होता था।

2. प्राचीन भारत की कला

(i) स्थापत्य कला :– भारत की स्थापत्य कला के स्मारक चार रूपों में मिलते है– स्तम्भ, स्तूप, भवन, गुहागृह।

(क) स्तम्भः– भारतीय स्थापत्य कला के उत्तम नमूने के रूप में सम्राट अशोक द्वारा बनवाये गये लगभग तीस स्तम्भ भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए हैं। भारतीय एवं विदेशी स्थापत्य कला विशेषज्ञ सम्राट अशोक के इन स्तम्भों को प्राचीन भारत की स्थापत्यकला के सर्वोत्तम प्रतिनिधि मानते हैं। ये स्तम्भ पत्थर के सूंडाकार (हाथी की सूंड के आकार के) किन्तु ऊपर की ओर पतले और नीचे की ओर मोटे हैं। आमतौर पर ये भारी और लम्बे हैं। इनकी लम्बाई लगभग 40 से 50 फीट तक है। प्रत्येक स्तम्भ एक ही पाषाण खण्ड से बना है। इन स्तम्भों पर एक विशेष प्रकार का लेप किया गया है, जिसकी चिकनाई, पालिश और चमक आश्चर्य में डालने वाली है। इनकी पालिश आज भी शीशे की भांति चमकती है। समस्त स्तम्भों में सारनाथ का पाषाण स्तम्भ सबसे अधिक सुन्दर है।

(ख) स्तूप एवं भवन :–'स्तूप' ईंटों या पत्थर के ऊँचे टीले सृदश गुम्बावदार स्मारक हैं। स्तूपों में मध्य भारत में भोपाल के निकट सांची का स्तूप सबसे अधिक प्रसिद्ध है। स्थापत्य स्मारकों व भवनों की कला और सुन्दरता को देखकर भारत की यात्रा करने वाले चीनी यात्री फाह्यान ने लिखा कि इन महल व भवनों को देखकर लगता है कि इस लोक के मनुष्य इन्हें नहीं बना सकते हैं, ये देवताओं द्वारा बनवाए गए होंगे।'' दक्षिणी–पूर्वी एशिया के देशों में कई स्तूप मिले हैं।

(ग) गुहागृहः–स्थापत्यकला स्मारकों में गुहागृहों का अपना अलग महत्व हैं। पर्वतों की कठोर चट्टानों को काटकर उन्हें निवास गृह, उपासना गृह और सभा भवनों का आकार देना भारतीय स्थापत्य कला की अपनी निजी शैली है।

(ii) मूर्तिकला– प्राचीन भारत की मूर्तिकला भावपूर्ण, ओजस्विता, आध्यात्मिकता, प्रभावोत्पादकता, सहज––प्राकृतिकता, अंग–सौष्ठवता, कलात्मक सुन्दरता तथा शिल्पीय कुशलता में अनुपम है। प्राचीनकाल में बनी मूर्तियों में उदयगिरि की वाराह अवतार' की मूर्ति, पाथारी में श्रीकृष्ण के जन्म के दृश्य की मूर्तियां, देवगढ़ के मन्दिर में शेष–शैय्या पर सोए विष्णु की मूर्ति तथा मण्डोर (जोधपुर) में श्रीकृष्ण के जीवन की कई झांकियों को प्रदर्शित करने वाली मूर्तियां बड़ी आकर्षक हैं। इसके अतिरिक्त मन्कुवर तथा सारनाथ की पत्थर की बुद्ध प्रतिमाएँ, सुल्तानगंज की विशाल ताम्बे की बुद्ध प्रतिमा, सम्राट अशोक के सारनाथ के स्तम्भ पर बने चार शेरों की मूर्तियाँ भारतीय मूर्तिकला के श्रेष्ठ नमूने हैं। बृहत्तर भारत के कम्बोडिया में विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सरस्वती, लक्ष्मी, गणेश आदि की मूर्तियाँ आकर्षक रूप लिये हुए हैं।

(iii) चित्रकला– भारतीय चित्रकला के अनुपम उदाहरण अजन्ता, ग्वालियर तथा बाघ की गुफाओं की चित्रकला को माना जाता है। अजन्ता के चित्रों से यह ज्ञात होता है कि भारतीय कलाकारों ने मानव जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं छोड़ा था। चित्रों में विविध प्रकार का अंग विन्यास, मुख –मुद्रा, भाव–भंगिमा, वेशभूषा, विविध केश विन्यास, रूप–रंग आदि अति सुन्दरता से चित्रित हैं। अजन्ता के चित्रों में ''मरणासन्न' राजकुमारी'' चित्र की भावाभिव्यक्ति इतनी गम्भीर है कि इसे देखकर चित्त प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। अजन्ता की गुफाओं में महलों, पेड़–पौधों, लता –पत्तियों तथा बुद्ध के जीवन के बहुत से दृश्य चित्रित किए गए हैं। अजन्ता की चित्रकारी इतने उत्कृष्ट दर्जे की थी कि वास्तव में उसका कोई अनुकरण नहीं कर सकता।

(iv) संगीतकला– भारतीय कला के क्षेत्र में संगीत भी अछूता नहीं रहा। भारतीय सम्राटों का संरक्षण प्राप्त कर संगीत कला के तीनों अंगों–गायन, वादन और नृत्य के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति हुई। प्राचीनकाल में संगीत की शिक्षा के कई केन्द्र विद्यमान थे।

(v) मुद्रा कलाः– प्राचीन भारत के शासकों की मुद्राओं में भारतीयता और राष्ट्रीयता के साथ कलात्मक सौन्दर्य के प्रचुर दर्शन होते है। शासकों ने अपने स्तर पर अपने ढंग की अनेक सोने व चांदी की मुद्राओं का निर्माण करवाया।

3. प्राचीन भारत में शिक्षा – भारत को विश्वगुरू कहा जाता है। विश्व का पहला विश्वविद्यालय ईसा से 700 वर्ष पूर्व तक्षशिला में था, जहां विश्वभर के 10,000 विद्यार्थी 60 से अधिक विषयों का अध्ययन करते थे। दूसरा विश्वविद्यालय ईसा से 400 वर्ष पूर्व नालन्दा में स्थापित हुआ था। ज्ञान की शिक्षा लेने के लिए ही मेगस्थनीज, ह्वेनसांग, फाह्यान आदि विदेशी विद्वान भारत आये थे। तक्षशिला, नालन्दा के अलावा उज्जैन, बनारस, राजगृह तथा पाटलिपुत्र, उच्च शिक्षा के विख्यात केन्द्र थे। इनमें धर्मशास्त्र के अलावा राजनीति, नीतिशास्त्र, व्याकरण, वेद, उपनिषद्, पुराण, साहित्य, ज्योतिष, चिकित्सा आदि विषयों की शिक्षा भी दी जाती थी। वृहत्तर भारतीय देशों से छात्र यहां पढ़ने आते थे।

4. प्राचीन भारत का साहित्य

प्राचीन भारत में तीन भाषाएं प्रचलित थी– संस्कृत प्राकृत तथा पालि भाषा। भाषा के आधार पर प्राचीन भारतीय साहित्य को हम तीन भागों में बांट सकते हैं–

(I) संस्कृत साहित्यः– संस्कृत साहित्य में वेद, वेदांग , उपनिषद, स्मृति, सूत्र साहित्य प्रमुख है। विशाखदत्त का ''मुदाराक्षस'' भारवी 'का किरातार्जुनियम'', भरत का 'स्वप्नवासदत्ता'' नामक नाटक तथा कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' आदि संस्कृत साहित्य की अनुपम कृतियां है। भर्तृहरि ने वाक्यदीप, श्रृंगारशतक एवं नीतिशतक नामक उच्चकोटि के नीति व व्याकरण ग्रंथ लिखे। संस्कृत के महाकवि कालिदास तो विश्व के सर्वोत्कृष्ट कवियों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके ग्रंथों में कौनसा ग्रंथ सर्वश्रेष्ठ है, नहीं कहा जा सकता। 'कुमारसम्भवम्' और रघुवंशम् कालिदास के दो महाकाव्य है। 'मेघदूतम्' और ऋतुसंहार उनके दो खण्डकाव्य और 'विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्' उनके तीन नाटक है। पंचतंत्र की कहानियाँ भारत की विश्व को बहुत बड़ी देन है। कम्बोडिया में वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों का प्रचलन था।

(ii) बौद्ध साहित्य– बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा पालि और संस्कृत भाषा में बौद्ध दर्शन और विचारधारा से सम्बंधित प्रभूत साहित्य की रचना की गई। साथ ही महात्मा बुद्ध के जीवन को आधार बनाकर संस्कृत और जन भाषाओं में साहित्य की रचना की गई। बौद्ध ग्रंथों में विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक, अवदानशतक, दिव्यावदान, मन्जूश्रीमूलकल्प, बुद्धचरित्र महाकाव्य तथा जातक कथा साहित्य प्रमुख है। इन सब ने भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और लोक भाषाओं के विकास में सहयोग दिया।

(iii) जैन साहित्य– भारतीय सभ्यता और संस्कृति को साहित्य के क्षेत्र में जैन धर्म ने महत्वपूर्ण देन दी है। जैन धर्म का आगम साहित्य प्राकृत में लिखा हुआ है। जैन विद्वानों ने विभिन्न युगों में उन्नत साहित्य का सृजन किया जो आज बड़ी निधि के रूप में उपलब्ध है। इन लेखकों में गुजरात के हेमचन्द्र बहुत प्रसिद्ध हुए है। जैन लेखकों ने प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश भाषाओं में ही अपने ग्रंथ नहीं रचेः बल्कि कन्नड़, तमिल व तेलुगु में भी जैन साहित्य लिखा गया। जैन साहित्यकारों ने भारत की जन भाषाओं में साहित्य

रचना कर एक तरफ भारतीय साहित्य भण्डार को भरा, वहीं भारत के आध्यात्मिक चिन्तन को सर्वसाधारण तक पहुंचाया।

5. विज्ञानः— भारत विज्ञान व तकनीकी दृष्टि से कितना समृद्ध था। इसका प्रमाण 1600 वर्ष से दिल्ली में स्थित लौह स्तम्भ है जो विश्व धातु विज्ञानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

प्राचीन भारत के धातु शोधन के उच्च ज्ञान का परिचय दिल्ली में कुतुबमीनार के इस लौह स्तम्भ से होता है। 24 फीट लम्बे तथा लगभग 180 मन वजन के इस स्तम्भ को देखकर आश्चर्य होता है कि सैंकड़ों वर्षों की बरसात व धूप सहन कर लेने पर भी आज यह स्तम्भ बिना जंग खाये खड़ा है। भारतीयों के गुरूत्वाकर्षण तथा भौतिक विज्ञान के सिद्धान्तों के उच्च ज्ञान का उदाहरण बेलूर (कर्नाटक) में केशव मन्दिर में 40 फीट ऊँचा तथा 20 हजार किलोग्राम का एक प्रस्तर स्तम्भ है जो बिना सहारे समतल भूमि में बिना गाड़े खड़ा है। भौतिक, रसायन व वनस्पति विज्ञान का भी भारतीयों को पर्याप्त ज्ञान था।

4. गणितः— भारत का गणित में सबसे बड़ा योगदान शून्य का आविष्कार है जिसका प्रयोग पाँचवीं शताब्दी में आर्यभट्ट ने किया था। पूर्णांक के साथ अपूर्णांक (भिन्न) को व्यक्त करने के लिए दशमलव के प्रयोग द्वारा गणित के विकास का क्रान्तिकारी आधार प्रस्तुत करने वाली दाशमिक प्रणाली, मूलतः भारत में निर्मित हुई जो सातवीं शती के बाद संस्कृत से अरबी और लैटिन में हुए अनुवाद—ग्रंथों के माध्यम से संसार भर में प्रचलित हुई।

वर्गमूल और घनमूल निकालने की पद्धति, त्रिभुज, चतुर्भुज तथा वृत्त की परिधि, एक क्षेत्रफल निकालने के सूत्र चक्रीय चतुर्भुजों के परस्पर छेदने वाले विकर्ण और उनका उपयोग, समानान्तर, गुणोत्तर श्रेणी तथा उनका समाकलन आदि का ज्ञान छठी शती में आर्यभट्ट को था। इतना ही नहीं वृत्त परिधि एवं व्यास के अनुपात दर्शक सुप्रसिद्ध नियताँक 'पाई' का चार दशमलव स्थान तक यथार्थ मान भी आर्यभट्ट ने ज्ञात किया। सातवीं शती के उत्तरार्द्ध में आर्यभट्ट के चार ग्रंथों के लैटिन में अनुवाद हुए है। घनात्मक संख्या को शून्य से भाग देने पर भागफल 'अनन्त' होता है, इसका ज्ञान भास्कराचार्य ने दिया। भास्कराचार्य के 'लीलावती एवं 'सिद्धान्त शिरोमणि' दोनों ग्रंथ संसार की अमूल्य निधि है। गणित के क्षेत्र में वर्तमान में प्रचलित पाइथोगोरस प्रमेय का प्रतिपादन सत्ताईस सौ वर्ष पहले बोधायन ने किया था जिसे चित्ति—प्रमेय के नाम से जाना जाता था।

7. ज्योतिष एवं खगोल— गणित के आधार पर ज्योतिष की भी प्राचीन काल में प्रगति हुई। आर्यभट्ट गणितज्ञ होने के साथ—साथ ज्योतिष का भी विद्वान था। उसने ही पृथ्वी का अपनी कीली पर चारों ओर घूमने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया तथा विभिन्न ग्रहों और नक्षत्रों का पता लगाकर सूर्य और चन्द्रग्रहण के कारणों को स्पष्ट किया। चन्द्रमा का पृथ्वी के चारों ओर पृथ्वी का अपने अक्ष पर भ्रमण देखकर बारह राशियाँ, सत्ताईस नक्षत्र, तीस दिन का चन्द्रमास, बारहमास का वर्ष, चान्द्र और सौर वर्ष के अन्तर को समन्वित करने हेतु प्रति तीसरे वर्ष पुरुषोत्तम (अधिक) मास द्वारा समायोजित आदि शास्त्र शुद्ध खगोल—सिद्धान्त प्राचीन ज्योतिष विद्वानों ने प्रतिपादित किये। वराहमिहिर, कणाद, नागार्जुन, वाग्भट्ट प्राचीन भारत के प्रमुख ज्योतिषाचार्य व खगोलशास्त्री थे।

8. आयुर्वेद :— आयुर्वेद विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति है जो कि भारत की देन है। धन्वन्तरि को आयुर्वेद का जनक माना जाता है। औषधि तथा रसायन विज्ञान में भारतीय दुनिया में सबसे आगे थे। भारत में धातुओं को शुद्ध करना, व भस्म बनाना जड़ी—बूटियों से औषधियों का निर्माण करना, अनेक प्रकार के प्राकृतिक रंग बनाना आदि प्राचीनकाल से ही किया जाता रहा है। नागार्जुन को कई रासायनिक क्रियाओं का ज्ञान था। नागार्जुन ने रस चिकित्सा प्रणाली (विविध धातुओं एवं अन्य वस्तुओं की भस्म बनाकर औषधि के रूप में उनका प्रयोग) का आविष्कार करके चिकित्सा के क्षेत्र में नवीन पद्धति का सूत्रपात किया।

सुश्रुत विश्व का प्रथम सर्जन (शल्य चिकित्सक) माना गया है। उन्हें सिजेरियन, मोतियाबिन्द, अंग प्रत्यारोपण, पथरी आदि की शल्य क्रियाओं के साथ बेहोशी की दवा का भी ज्ञान था। वे शल्य क्रियाओं में आने वाले 100 से भी अधिक उपकरणों का वर्णन करते हैं। औषधि विज्ञान के क्षेत्र में चरक का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

इस प्रकार प्राचीन भारत का विश्व की सभ्यता व संस्कृति में अपना विशिष्ट व महत्वपूर्ण स्थान है। यह वृहत्तर भारत के परिवेश तथा भारतीय साहित्य, कला, विज्ञान, गणित ज्योतिष, खगोल, आयुर्वेद, व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग आदि से सम्बन्धित उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. प्राचीन काल में भारत सोने की चिड़िया के नाम से विख्यात था।
2. एशिया के उस भू–भाग को जहाँ प्राचीन काल से लेकर दसवीं शताब्दी तक भारत की संस्कृति विस्तृत थी, बृहत्तर भारत कहते हैं।
3. बृहत्तर भारत मध्यएशिया, उत्तरी–पूर्वी तथा दक्षिणी–पूर्वी एशिया के भू–भाग में फैला हुआ था।
4. बृहत्तर भारत में हिन्दू मन्दिर व बौद्ध स्तूप प्रायः सभी जगह पर पाये जाते हैं।
5. प्राचीन भारत में मोती, बहुमूल्य पत्थर, सुगंधित पदार्थ, कपड़े, मसाले, औषधियाँ आदि विदेशों में निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ थी।
6. प्राचीनकाल में व्यावसायिक संगठनों को श्रेणी, श्रेष्ठी या गण कहा जाता था।
7. भारत की स्थापत्यकला के स्मारक चार रूपों में मिलते हैंः– स्तम्भ, स्तूप, भवन या मन्दिर, गुहागृह।
8. अशोक के सारनाथ के स्तम्भ पर बनी मूर्ति भारतीय मूर्तिकला का श्रेष्ठ नमूना है।
9. प्राचीनकाल में तक्षशिला, नालन्दा विश्वविद्यालय तथा उज्जैन, बनारस, राजगृह एवं पाटलिपुत्र उच्च शिक्षा के विख्यात केन्द्र थे।
10. प्राचीन भारत में तीन भाषाएं मुख्यतया प्रचलित थी– संस्कृत, प्राकृत तथा पालि भाषा।
11. गणित के क्षेत्र में दशमलव तथा शून्य भारत की खोज है जो विश्व को भारत की देन है।
12. औषधि विज्ञान में सुश्रुत विश्व का प्रथम शल्य चिकित्सक (सर्जन) था।
13. बृहत्तर भारत में बौद्ध धर्म एवं मुस्लिम धर्म के प्रसार के कारण भारतीय संस्कृति का प्रसार कम हो गया।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्राचीनकाल मे ंसोने की चिड़िया कौनसे देश को कहा जाता था?
   (अ) चीन (ब) भारत
   (स) मिस्र (द) यूनान
2. निष्क क्या है?
   (अ) सोने का सिक्का
   (ब) चांदी का सिक्का
   (स) ताम्बे का सिक्का
   (द) इनमें से कोई नहीं
3. कुमारसंभवम् और रघुवंश नामक महाकाव्य लिखे हैं–
   (अ) कालिदास ने (ब) कौटिल्य ने
   (स) भारवी ने (द) विशाखदत्त ने
4. प्रस्तर स्तम्भ कहाँ स्थित है जो समतल भूमि पर बिना गाड़े खड़ा है?
   (अ) सारनाथ में (ब) दिल्ली में
   (स) बैलूर (कर्नाटक) में (द) मन्कुवर में
5. 'लीलावती' एवं सिद्धान्त शिरोमणि नामक ग्रंथ किसने लिखे है?
   (अ) भास्कराचार्य (ब) बोधायन
   (स) आर्यभट्ट (द) नागार्जुन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अंगकोरवाट के मन्दिर कहाँ पर स्थित है?
2. वियतनाम का प्राचीन नाम क्या है?
3. बृहत्तर भारत के किस क्षेत्र में नगरों के नाम भारत के नगरों की तरह थे?
4. व्यावसायिक संगठनों को क्या कहा जाता था?
5. विश्व का पहला विश्वविद्यालय कौनसा है?
6. लौह स्तम्भ कहाँ स्थित है?
7. 'पाई' का यथार्थ मान किसने ज्ञात किया?
8. चिति प्रमेय का प्रतिपादन कौनसे गणितज्ञ ने किया?
9. सूर्य और चन्द्रग्रहण के कारणों को सर्वप्रथम किसने स्पष्ट किया?
10. भारत के प्रमुख दो खगोल शास्त्रों के नाम बताइए।
11. विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति कौनसी है?
12. रस चिकित्सा प्रणाली का आविष्कार किसने किया?
13. विश्व का प्रथम सर्जन किसे माना गया है?
14. थाईलैण्ड का प्राचीन नाम क्या था?
15. तिब्बत भारत की कौनसी दिशा में स्थित है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बृहत्तर भारत में विदेशी व्यापार का वर्णन कीजिए।
2. बृहत्तर भारत में मुख्य उद्योग कौन–कौन से थे? उल्लेख कीजिए।
3. स्तम्भ भारतीय स्थापत्यकला के उत्कृष्ट नमूने क्यों है? स्पष्ट कीजिए।
4. ज्योतिष व खगोल के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।
5. प्राचीन भारत में संस्कृत साहित्य में कौन–कौनसी रचनाएं लिखी गई।
6. वृहत्तर भारत में भारतीय सभ्यता व संस्कृति के केन्द्र कौन–कौन से थे ? नाम बताइए।
7. बौद्ध व जैन साहित्य किस–किस भाषा में लिखा गया?

निबन्धात्मक

1. वृहत्तर भारत क्या है? स्पष्ट कीजिए।
2. वृहत्तर भारत के स्वरूप को समझाइये।
3. प्राचीन भारत की कला का वर्णन कीजिए।
4. गणित के क्षेत्र में भारत की क्या देन है?उल्लेख कीजिए।
5. विज्ञान व चिकित्सा के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों को स्पष्ट कीजिए।
6. वृहत्तर भारत में व्यापार व वाणिज्य का वर्णन कीजिए।
7. कम्बोडिया (कम्बोज) में भारतीय संस्कृति के प्रसार का वर्णन कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(1) ब (2) अ (3) अ (4) स (5) अ